शिवाभिषेक

(रुद्राभिषेक की पूरक - सुगम विधि)

संशोधित-संवर्धित संस्करण

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार।

प्रकाशक

श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार, (उत्तराखण्ड)

संशोधित संस्करण २०१५ मूल्य-०७/-

पूर्व निवेदन

युग निर्माण अभियान युगाधिपति महाकाल के द्वारा प्रेरित है। परमात्मसत्ता जब कालचक्र में कोई बड़ा परिवर्तन करने के लिए सक्रिय होती है, तो उसकी भूमिका महाकाल की होती है। महाकाल सम्बोधन भगवान् शिव के लिए किया जाता है। जब मनुष्यों की भूलों और असावधानियों से अशिव तत्त्व सबल एवं उन्मत्त होकर नाचने लगता है तो फिर शिव-शक्ति भी ताण्डव करने लगती है। जैसे प्रकाश के प्रभाव से अन्धकार नष्ट होने लगता है, वैसे ही शिव के प्रभाव से अशिव का लोप होने लगता है।

युग निर्माण अभियान के अन्तर्गत बने गायत्री शक्तिपीठों में स्थान-स्थान पर शिव-महाकाल के मन्दिर भी स्थापित हो गये हैं। वैसे भी शिव उपासना भारत में बहुत लोकप्रिय है। इसलिए धर्मतन्त्र से लोक-शिक्षण के क्रम में भी शिवार्चन को स्थान देना उचित लगता है।

परम्परागत शिवार्चन रुद्राभिषेक रुद्रियपाठ के सहित बहुत कठिन और समय साध्य है। युग निर्माण अभियान के अन्तर्गत सभी प्रकार के कर्मकाण्डों को समयानुकूल विवेक सम्मत तथा प्रभावी रूप देने के तमाम सफल प्रयोग किये गये हैं। इसी क्रम में रुद्राभिषेक के स्थान पर (सन् २००७) में शिवाभिषेक पुस्तिका सम्पादित की गयी थी। वह बहुत लोकप्रिय और जनोपयोगी सिद्ध हुई। श्रद्धालुजनों की माँग के आधार पर उसी के संशोधित संवर्धित रूप में यह पुस्तिका सम्पादित की गयी है। शिव जी की कुछ और भी महत्त्वपूर्ण स्तुतियाँ जोड़ दी गयी हैं। आशा है, यह संस्करण सर्वजन प्रिय होगा एवं श्रद्धालुजन इसका समुचित लाभ उठा सकेंगे।

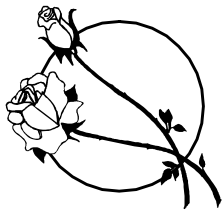

-ब्रह्मवर्चस

विषय-सूची

	विषय	पृष्ठ सं०
१.	मङ्गलाचरणम् से स्वस्तिवाच०	५ -९
२.	गणेश आवाहनम् से अष्टोत्तर शत शिवनामस्मरणम् तक	९ -१३
३.	श्रीसदाशिव पूजनम्(ध्यानम् से शान्ति अभिसिंचनम् तक)	१३-२१
४.	आरती शिवजी की १-२	२२
५.	शिवपञ्चाक्षर स्तोत्र	२३
६.	महाकालाष्टकम्	२४
७.	श्रीमहाकालाष्टक (पद्यानुवाद)	२४
८.	श्रीरुद्राष्टकम्	२५
९.	श्रीशिवताण्डवस्तोत्रम्	२६-२७
१०.	द्वादशज्योतिर्लिङ्गानि	२८
११.	शिवोऽहम् शिवोऽहम्	२९
१२.	जय देव-देव जय महादेव	३०
१३.	तुम भोले भाले शम्भु	३०
१४.	शिव का सुमिरन	३१
१५.	शिव भोले हितकारी	३१
१६.	हे महादेव! हे महादेव!	३२

टिप्पणी

१. विशेष प्रयोजन हेतु अभिषेक करना है तो विशेष सामग्री पृष्ठ १६ के अनुसार व्यवस्था बना लें।

२. यदि कोई भी पूजन सामग्री की व्यवस्था न बन पाये तो उसे मन से बनाकर चढ़ा देना चाहिए। जैसे- **ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, बिल्वपत्रं मनसा परिकल्प्य समर्पयामि।**

३. कालसर्प योग दोष निवारण इस शिवाभिषेक विधि के साथ यज्ञ करने से हो जाता है। संकल्प हेतु उज्वल भविष्य कामनापूर्तये के पश्चात् **कालसर्प योग दोष निवारणार्थं** जोड़ लें।

४. प्रतिष्ठित शिवलिंग न हो तो प्राण प्रतिष्ठा पृष्ठ-२१ के अनुसार कर लें।

५. जिन मंत्रों के नीचे केवल अंक लिखे हैं, वे यजुर्वेद के हैं।

आवश्यक पूजन-सामग्री

१. लोटा – कलश पूजन हेतु (गले में कलावा, स्वस्तिक आदि बनाकर मंगल द्रव्य-दूर्वा, कुश, सुपारी,पुष्प,पल्लव डालें,जल भर लें,चावल से भरा पूर्णपात्र अथवा नारियल कलश पर स्थापित करें)।

२. बड़ी तश्तरी – पूजन सामग्री रखने हेतु

३. छोटी तश्तरी – पूजन सामग्री समर्पित करने हेतु

४. आचमन पात्र – छोटी कटोरी एवं चम्मच।

५. शृङ्गी या लोटा – जल की धार (महाभिषेक) हेतु

६. बाल्टी – जल भरकर गंगा जल मिला लें।

७. आसन – आवश्यकतानुसार,

८. तौलिया – दो नग (शिव लिंग की सफाई एवं हाथ पोछने के लिए)

९. वस्त्र एवं दक्षिणा – शिव जी को समर्पित करने हेतु।

१०. पूजन हेतु – अक्षत, पुष्प, पुष्प माला, रोली, यज्ञोपवीत, अबीर (गुलाल), पान-सुपारी या लौंग, धूपबत्ती या अगरबत्ती, भस्म, बिल्वपत्र, दूर्वा, मिष्टान्न, ऋतुफल या पञ्चमेवा

११. स्नान के लिए – दूध, दही, घृत, शहद, चीनी,पञ्चामृत (पूर्वोक्त पाँचों का मिश्रण), सफेद चंदन या हल्दी।

१२. आरती हेतु – घृत का दीपक-२ नग, रुई, कपूर, दियासलाई (माचिस)

१३. प्रसाद वितरण – पूजन में सम्मिलित यजमानों के लिए। मिष्टान्न या अन्य कोई प्रसाद।

॥ मङ्गलाचरणम् ॥

बायें हाथ में अक्षत-पुष्प लें, मंत्रोच्चार के साथ सबके कल्याण की मंगल कामना करते हुए सभी के ऊपर अक्षत-पुष्प की वर्षा करें। भावना करें कि हमारे ऊपर दैवी-अनुग्रह बरस रहा है।

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा, भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिः, व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ - २५.२१

॥ पवित्रीकरणम् ॥

बायें हाथ में जल लेकर उसे दाहिने हाथ से ढक लें। मंत्रोच्चारण के बाद उसे सिर तथा शरीर पर छिड़क लें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं, स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥
ॐ पुनातु पुण्डरीकाक्षः, पुनातु पुण्डरीकाक्षः,पुनातु।-वा०पु ३३.६

॥ आचमनम् ॥

वाणी, मन और अन्तःकरण की शुद्धि के लिए तीन बार आचमन करें।

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा॥ १ ॥
ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा॥ २ ॥
ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि, श्रीःश्रयतां स्वाहा॥ ३ ॥

॥ शिखावन्दनम् ॥

दाहिने हाथ की अँगुलियों को गीला कर शिखा स्थान का स्पर्श करें।

ॐ चिद्रूपिणि महामाये, दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये, तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥ सं०प्रयोग

॥ प्राणायामः ॥

गहरी श्वास खीचें, थोड़ी देर रोकें, पुनः बाहर निकाल दें। प्राणायाम की क्रिया सम्पन्न करें ।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः, ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्।
ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।
ॐआपोज्योतीरसोऽमृतं, ब्रह्म भूर्भुवः स्वः ॐ।
-(तैत्तिरीय आरण्यक १०.२७)

॥ न्यासः ॥

बायें हाथ की हथेली में थोड़ा सा जल लेकर दाहिने हाथ की अँगुलियों से निर्देशित अंगों को स्पर्श करें, भावना करें कि हमारे अंग-प्रत्यंग शक्तिशाली, पवित्र और तेजोमय हो रहे हैं।

ॐ वाङ्.मे आस्येऽस्तु। (मुख को)

ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु। (नासिका के दोनों छिद्रों को)

ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु। (दोनों नेत्रों को)

ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु। (दोनों कानों को)

ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु। (दोनों भुजाओं को)

ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु। (दोनों जँघाओं को)

ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि,तनूस्तन्वा मे सह सन्तु। (समस्त शरीर पर)

॥ पृथ्वी पूजनम् ॥

पृथ्वी पर जल चढ़ाकर उसका पूजन करें।

ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका, देवि! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्॥ -सं०प्रयोग

॥ सङ्कल्पः ॥

दाहिने हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर संकल्प करें।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य, अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीये परार्धे, श्रीश्वेतवाराहकल्पे, वैवस्वत मन्वन्तरे, भूर्लोके, जम्बूद्वीपे, भारतवर्षे, भरतखण्डे, आर्यावर्त्तैक देशान्तर्गते --------क्षेत्रे----------स्थले मासानां मासोत्तमे मासे -------मासे---------पक्षे--------तिथौ----------वासरे- --------गोत्रोत्पन्नः---------------नामाहं सत्प्रवृत्ति सम्वर्धनाय, दुष्प्रवृत्ति- उन्मूलनाय, लोक कल्याणाय, आत्म कल्याणाय, वातावरण परिष्काराय, उज्ज्वल भविष्य कामनापूर्तये, मम ज्ञान भक्ति वैराग्य पूर्वकम्, क्षेमस्थैः आयुरारोग्यादिभिः वृद्ध्यर्थम् च शिवाभिषेक कर्म करिष्ये, तदङ्गत्वेन गणपत्यादि आवाहन-पूजनपूर्वकं सङ्कल्पं अहं करिष्ये।

॥ चन्दनधारणम् ॥

मस्तिष्क को शान्त, शीतल रखने का भाव रखते हुए मस्तक पर चंदन लगायें।

ॐ चन्दनस्य महत्पुण्यं, पवित्रं पापनाशनम्।

आपदां हरते नित्यं, लक्ष्मीस्तिष्ठति सर्वदा॥

॥ रक्षासूत्रम् ॥

इस पुण्य कार्य के लिए व्रतशील बनकर उत्तरदायित्व स्वीकार करने का भाव रखते हुए कलावा बाँधें।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्।

दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति, श्रद्धया सत्यमाप्यते॥ - १९.३०

॥ कलशपूजनम् ॥

अक्षत, पुष्प, जल से कलश देवता का पूजन करें।

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानः, तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ७ँ,समानऽआयुः प्रमोषीः। -१८.४९

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य, बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं, यज्ञ७ँ समिमं दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ। -२.१३

ॐ वरुणाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

जलम्, गन्धाक्षतं, पुष्पाणि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि।

ॐ कलशस्थ देवताभ्यो नमः।

॥ दीपपूजनम् ॥

दीपक को चेतना का प्रतीक मानकर अक्षत, पुष्प से पूजन करें।

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। सूर्यो वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥ ॐ ज्योतिपुरुषाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। ३.९

॥ देवावाहनम् ॥

परमात्मा की दिव्य चेतना का वह अंश जो साधकों का मार्गदर्शन और सहयोग करने के लिए व्यक्त होता है। अक्षत-पुष्प लेकर गुरुसत्ता का ध्यान, आवाहन करें।

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुरेव महेश्वरः।
गुरुरेव परब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः॥ १॥
अखण्ड मण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः॥ २॥– गुरुगीता ४३.४५
मातृवत् लालयित्री च, पितृवत् मार्गदर्शिका।
नमोऽस्तु गुरुसत्तायै, श्रद्धा-प्रज्ञा युता च या॥ ३॥
ॐ श्री गुरवे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि,ध्यायामि।

वेदमाता, देवमाता, विश्वमाता-सद्ज्ञान, सद्भाव की अधिष्ठात्री, सृष्टि की आदि कारण मातेश्वरी गायत्री का ध्यान, आवाहन करें।

ॐ आयातु वरदे देवि! त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि ।
गायत्रिच्छन्दसां मातः, ब्रह्मयोने नमोऽस्तु ते॥ ४॥ –सं० प्रयोग
ॐ श्री गायत्र्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।
ततो नमस्कारं करोमि।

ॐ स्तुता मया वरदा वेदमाता, प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशुं , कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्। –अथर्ववेद १९.७१.१

॥ सर्वदेव नमस्कारः ॥

अब नमः के साथ हाथ जोड़कर सिर झुकाकर सभी देव शक्तियों को नमन वन्दन करें।

ॐ सिद्धि बुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।

ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। **ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः।**
ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। **ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः।**
ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः। **ॐ कुलदेवताभ्यो नमः।**
ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। **ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः।**
ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। **ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः।**
ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। **ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।**
ॐ सर्वेभ्यस्तीर्थेभ्यो नमः।

ॐ एतत्कर्मप्रधान श्रीमन्महाकालाय नमः।
ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।

॥ स्वस्तिवाचनम् ॥

हमारा परिवार, समाज, राष्ट्र सबका कल्याण हो, इसी भाव से हाथ में अक्षत, पुष्प, जल लेकर स्वस्तिवाचन करें।

ॐ गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे, प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे, निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे, वसोमम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥ –यजु० २३.१९

ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः, स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः, स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।–२५.१९

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु, पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥ –यजु० १८.३६

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः, श्नप्त्रेस्थो विष्णोः,स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि, वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥ –यजु० ५.२१

ॐ अग्निर्देवता वातो देवता, सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता, वसवो देवता रुद्रा देवता, ऽऽदित्या देवता मरुतो देवता, विश्वेदेवा देवता, बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता, वरुणो देवता॥ –यजु० १४.२०

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ꣳ शान्तिः, पृथिवी शान्तिरापः, शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः, शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः, सर्व ꣳ शान्तिः, शान्तिरेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि॥

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्नऽआ सुव।
ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः॥ सर्वारिष्टसुशान्तिर्भवतु॥ ३०.३

अक्षत, पुष्प लेकर शिव परिवार का आवाहन करें। (गणेश, गौरी, आदि की प्रतिमा न होने पर पूजन सामग्री शिवलिंग पर ही समर्पित करें।)

॥ गणेश आवाहनम् ॥

ॐ लम्बोदर! नमस्तुभ्यं, सततं मोदकप्रिय।
निर्विघ्नं कुरु मे देव, सर्वकार्येषु सर्वदा॥
ॐ एकदन्ताय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्॥
ॐ श्री गणपतये नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

॥ भवानी आवाहनम् ॥

ॐ प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा।
अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके, न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां, काम्पीलवासिनीम्॥ - २३.१८
ॐ नमो देव्यै महादेव्यै, शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥
ॐ श्री गौर्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

॥ नन्दीश्वर आवाहनम् ॥

ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमी, दसदन् मातरं पुरः। पितरञ्च प्रयन्त्स्वः॥
ॐ नन्दीश्वराय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥-३.६

॥ स्वामी कार्तिकेय आवाहनम् ॥

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमानऽ, उद्यन्त् समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू, उपस्तुत्यं महिजातं ते अर्वन्॥ ॐ श्री स्कन्दाय नमः। आवाहयामि,स्थापयामि, ध्यायामि।

॥ गण आवाहनम् ॥

ॐ भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रारातिः,
सुभग भद्रो अध्वरः। भद्राऽउत प्रशस्तयः॥ -१५.३८
ॐ सर्वेभ्यो गणेभ्यो नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

॥ सर्प आवाहनम् ॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि, तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः। ॐ सर्पेभ्यो नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥- १३.६

अब एकादश रुद्रों एवं एकादश शक्तियों के नाम मन्त्रों से भगवान् श्रीसाम्बसदाशिव को हाथ जोड़कर नमन करें।

॥ एकादश- रुद्र नमन ॥

ॐ अघोराय नमः ॐ पशुपतये नमः ॐ शर्वाय नमः
ॐ विरूपाक्षाय नमः ॐ विश्वरूपिणे नमः ॐ त्र्यम्बकाय नमः
ॐ कपर्दिने नमः ॐ भैरवाय नमः ॐ शूलपाणये नमः
ॐ ईशानाय नमः ॐ महेश्वराय नमः ॐ एकादश रुद्रेभ्यो नमः।
आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

॥ एकादश-शक्ति नमन ॥

ॐ उमायै नमः ॐ शङ्करप्रियायै नमः ॐ पार्वत्यै नमः
ॐ गौर्य्यै नमः ॐ काल्यै नमः ॐ कालिन्द्यै नमः
ॐ कोटर्यै नमः ॐ विश्वधारिण्यै नमः ॐ ह्रां नमः
ॐ ह्रीं नमः ॐ गङ्गादेव्यै नमः ॐ एकादश शक्तिभ्यो नमः।
आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

अब शिव परिवार सहित सभी देव शक्तियों का पञ्चोपचार विधि से पूजन करें।

ॐ श्री शिव परिवारेभ्यो नमः। आवाहयामि, स्थापयामि। जलं, गन्धाक्षतं, पुष्पाणि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि।

॥ अथ अष्टोत्तरशत शिवनाम स्मरणम् ॥

विनियोगः- एक आचमनी जल लें।

ॐ अस्य श्री शिवाष्टोत्तर शतनाम मन्त्रस्य नारायणऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीसदाशिवो देवता गौरी उमाशक्तिः श्रीसाम्ब सदाशिव प्रीतये अष्टोत्तर शतनामभिः शिवस्मरणे विनियोगः।

जल छोड़ दें। अब हाथ जोड़कर भगवान् श्रीसाम्बसदाशिव का ध्यान करें।

शान्ताकारं शिखरि शयनं नीलकण्ठं सुरेशं।
विश्वाधारं स्फटिक सदृशं शुभ्रवर्णं शुभांगम् ॥
गौरीकान्तं त्रितय नयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं।
वन्दे शम्भुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

॥ श्रीसदाशिव पूजनम् ॥

अब भगवान शिव का पूजन करने के लिये सम्बन्धित सामग्री हाथ मे लें, मंत्रोच्चार के साथ अथवा पूरा होने पर समर्पित कर दें।

॥ ध्यानम् ॥

ॐ वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं , वन्दे जगत्कारणम्।
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं, वन्दे पशूनाम्पतिम् ॥

वन्दे सूर्यशशाङ्क वह्निनयनं, वन्दे मुकुन्दप्रियम् ।
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं, वन्दे शिवं शङ्करम्॥
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, ध्यानम् समर्पयामि।

॥ आवाहनम्॥

ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः, सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमि ꣳ सर्वतस्पृत्वा,अत्यतिष्ठद् दशांगुलम्॥–३१.१
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, आवाहयामि, स्थापयामि।

॥ आसनम्॥

ॐ पुरुषऽएवेद ꣳ सर्वं, यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो, यदन्नेनातिरोहति॥ – ३१.२
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, आसनं समर्पयामि।

॥ पाद्यम्॥

ॐ एतावानस्य महिमातो, ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वाभूतानि, त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ – ३१.३
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, पाद्यं समर्पयामि।

॥ अर्घ्यम्॥

ॐ त्रिपादूर्ध्व ऽ उदैत्पुरुषः, पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्, साशनानशने अभि॥– ३१.४
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

॥ आचमनम्॥

ॐ ततो विराडजायत, विराजो अधिपूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत, पश्चाद् भूमिमथो पुरः॥ –३१.५
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

॥ स्नानम्॥

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः, सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यान्, आरण्या ग्राम्याश्च ये॥ – ३१.६
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, स्नानं समर्पयामि।

शिवलिंग अच्छी तरह से साफ कर लें। स्नान में प्रयुक्त दूध, दही, घी, मधु, शर्करा आदि को इकठ्ठा कर प्रसाद स्वरूप सबको वितरित कर दें।

॥ पयः स्नानम् (दुग्ध) ॥

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु, पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्। -यजु० १८.३६
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, पयः स्नानं समर्पयामि।

॥ दधिस्नानम्॥

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं, जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्र णऽ, आयूꣳषि तारिषत्॥ -यजु० २३.३२
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, दधि स्नानं समर्पयामि।

॥ घृतस्नानम्॥

ॐ घृतं घृतपावानः, पिबत वसां वसापावानः,
पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशःप्रदिशऽ
आदिशो, विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥ -यजु० ६.१९
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, घृत स्नानं समर्पयामि।

॥ मधुस्नानम्॥

ॐ मधु वाताऽ ऋतायते, मधुक्षरन्ति सिन्धवः।माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।
ॐ मधु नक्तमुतोषसो, मधुमत् पार्थिवꣳरजः। मधुद्यौरस्तु नःपिता।
ॐ मधुमान्नो वनस्पतिः, मधुमाँ२अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥
-१३.२७-२९
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, मधु स्नानं समर्पयामि।

॥ शर्करा स्नानम्॥

ॐ अपा ꣳ रसमुद्वयस ꣳ, सूर्ये सन्त ꣳ समाहितम्। अपा ꣳ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णामि, उत्तममुपयाम गृहीतोसीन्द्रायत्वा, जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।-९.३
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, शर्करा स्नानं समर्पयामि।

॥ पञ्चामृत स्नानम्॥

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा, सो देशेऽभवत्सरित्॥ -यजु. ३४.११
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः,पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि।

॥ शुद्धोदक स्नानम्॥

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो, मणिवालस्तऽआश्विनाः,श्येतः

श्येताक्षोऽरुणस्ते, रुद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽ,अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥ -यजु० २४.३

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

॥ गन्धोदक स्नानम् ॥ (हल्दी, चन्दन आदि से)

ॐ अ ꣳ शुना ते अ ꣳ शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽ अच्युतः। -२०.२७

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः,गन्धोदक स्नानं समर्पयामि।

(पुनः शुद्ध जल से स्नान करायें। **ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो....** अन्य उपस्थित जन जलाभिषेक करें, इस बीच **ॐ नमःशिवाय** का पाठ करते रहें।)

॥ महाभिषेक स्नानम् ॥

शृङ्गी या लोटे से भगवान् शिव के ऊपर जलधार छोड़ें, महाभिषेक स्नान करायें।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽ उतो तऽ इषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः ॥१॥
या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ॥२॥
यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि ꣳ सीः पुरुषं जगत् ॥३॥
शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म ꣳ सुमनाऽ असत् ॥४॥
अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च, यातुधान्योऽधराचीः परा सुव ॥५॥
असौ यस्ताम्रो अरुणऽ उत बभ्रुः सुमंगलः।
ये चैन ꣳ रुद्राऽ अभितो दिक्षु श्रिताः,सहस्त्रशोऽवैषाꣳ हेडऽ ईमहे ॥६॥
असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।
उतैनं गोपाऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः ॥७॥
नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः ॥८॥
प्रमुञ्च धन्वनस् त्वमुभयोरार्त् न्योर्ज्याम्।
याश्च ते हस्तऽइषवः परा ता भगवो वप ॥९॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत।
अनेशन्नस्य याऽ इषवऽआभुरस्य निषङ्गधिः ॥१०॥
या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः।
तयाऽस्मान् विश्वतस् त्वमयक्ष्मया परि भुज॥११॥
परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः।
अथो यऽ इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम्॥१२॥
अवतत्य धनुष्ट्व ৺ सहस्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥१३॥
नमस्तऽ आयुधायानातताय धृष्णवे।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥१४॥
मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं, मा नऽउक्षन्तमुत मा नऽ उक्षितम्।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं, मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥१५॥
मा नस्तोके तनये मा नऽआयुषि, मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो,वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे॥१६॥

–१६.१–१६

(पुनः शुद्ध जल से स्नान करायें। **ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो.... **)

॥ वस्त्रम् ॥

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतऽ, ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दा ৺ सि जज्ञिरे तस्माद्, यजुस्तस्मादजायत॥ –३१.७
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

॥ यज्ञोपवीतम् ॥

ॐ तस्मादश्वा ऽ अजायन्त, ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्, तस्माज्जाता ऽ अजावयः॥ – ३१.८
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

॥ गन्धम् ॥

ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्, पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवाऽअयजन्त, साध्या ऽ ऋषयश्च ये॥ – ३१.९

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, गन्धं विलेपयामि।

॥ भस्मम्॥

ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने।
स ꣳ सृज्य मातृभिष्ट्वं, ज्योतिष्मान् पुनराऽसदः॥ १२.३८
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, भस्मम् विलेपयामि।

॥ अक्षतान्॥

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रियाऽ अधूषत। अस्तोषत
स्वभानवो विप्रा,नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी॥ -३.३१
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

॥ पुष्पाणि॥

ॐ यत् पुरुषं व्यदधुः, कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू, किमूरू पादा उच्येते॥ -३१.१०
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

॥ बिल्वपत्रार्पणम्॥

ॐ त्रिदलं त्रिगुणाकारं, त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम्।
त्रिजन्मपाप संहारं, बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥
दर्शनं बिल्वपत्रस्य, स्पर्शनं पापनाशनम्।
अघोरपाप संहारं, बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, बिल्वपत्रं समर्पयामि।

ध्यान के बाद भगवान् शिव के आगे लिखे १०८ नामों से शिवलिंग पर बिल्व पत्र चढ़ायें अथवा पुष्पाक्षत आदि से भगवान शिव का पूजन करें, नमन करें। (कोई बिल्वपत्र चढ़ाना चाहें तो प्रत्येक नाम के साथ समर्पित करते चलें।)

१. ॐ शिवाय नमः,	**२. ॐ महेश्वराय नमः,**
३. ॐ शम्भवे नमः,	**४. ॐ पिनाकिने नमः,**
५. ॐ शशिशेखराय नमः,	**६. ॐ वामदेवाय नमः,**
७. ॐ विरूपाक्षाय नमः,	**८. ॐ कपर्दिने नमः,**
९. ॐ नीललोहिताय नमः,	**१०. ॐ शङ्कराय नमः,**
११. ॐ शूलपाणिने नमः,	**१२. ॐ खट्वाङ्गिने नमः,**
१३. ॐ विष्णुवल्लभाय नमः,	**१४. ॐ शिपिविष्टाय नमः,**

१५. ॐ अम्बिकानाथाय नमः, १६. ॐ श्री कण्ठाय नमः,
१७. ॐ भक्तवत्सलाय नमः, १८. ॐ भवाय नमः,
१९. ॐ शर्वाय नमः, २०. ॐ त्रिलोकेशाय नमः,
२१. ॐ शितिकण्ठाय नमः, २२. ॐ शिवाप्रियाय नमः,
२३. ॐ उग्राय नमः, २४. ॐ कपालिने नमः,
२५. ॐ कामारये नमः, २६. ॐ अन्धकासुर सूदनाय नमः,
२७. ॐ गङ्गाधराय नमः, २८. ॐ ललाटाक्षाय नमः,
२९. ॐ कालकालाय नमः, ३०. ॐ कृपानिधये नमः,
३१. ॐ भीमाय नमः ३२. ॐ परशुहस्ताय नमः,
३३. ॐ मृगपाणये नमः, ३४. ॐ जटाधराय नमः,
३५. ॐ कैलासवासिने नमः, ३६. ॐ कवचिने नमः,
३७. ॐ कठोराय नमः, ३८. ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः,
३९. ॐ वृषाङ्काय नमः, ४०. ॐ वृषभारूढाय नमः,
४१. ॐ भस्मोद् धूलितविग्रहाय नमः, ४२. ॐ सामप्रियाय नमः,
४३. ॐ स्वरमयाय नमः, ४४. ॐ त्रयीमूर्तये नमः,
४५. ॐ अनीश्वराय नमः, ४६. ॐ सर्वज्ञाय नमः,
४७. ॐ परमात्मने नमः, ४८. ॐ सोमलोचनाय नमः,
४९. ॐ सूर्यलोचनाय नमः, ५०. ॐ अग्निलोचनाय नमः,
५१. ॐ हविर्यज्ञमयाय नमः, ५२. ॐ सोमाय नमः,
५३. ॐ पञ्चवक्त्राय नमः, ५४. ॐ सदाशिवाय नमः,
५५. ॐ विश्वेश्वराय नमः, ५६. ॐ वीरभद्राय नमः,
५७. ॐ गणनाथाय नमः, ५८. ॐ प्रजापतये नमः,
५९. ॐ हिरण्यरेतसे नमः, ६०. ॐ दुर्धर्षाय नमः,
६१. ॐ गिरीशाय नमः, ६२. ॐ गिरिशाय नमः,
६३. ॐ अनघाय नमः, ६४. ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः,
६५. ॐ भर्गाय नमः, ६६. ॐ गिरिधन्विने नमः,
६७. ॐ गिरिप्रियाय नमः, ६८. ॐ कृत्तिवाससे नमः,
६९. ॐ पुरारातये नमः, ७०. ॐ भगवते नमः,
७१. ॐ प्रमथाधिपाय नमः, ७२. ॐ मृत्युञ्जयाय नमः,

७३. ॐ सूक्ष्मतनवे नमः, **७४. ॐ जगद्व्यापिने नमः,**
७५. ॐ जगद्गुरवे नमः, **७६. ॐ व्योमकेशाय नमः,**
७७. ॐ महासेन जनकाय नमः, **७८.ॐ चारुविक्रमाय नमः,**
७९. ॐ रुद्राय नमः, **८०. ॐ भूतपतये नमः,**
८१. ॐ स्थाणवे नमः, **८२. ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः,**
८३. ॐ दिगम्बराय नमः, **८४. ॐ अष्टमूर्तये नमः,**
८५. ॐ अनेकात्मने नमः, **८६. ॐ सात्त्विकाय नमः,**
८७. ॐ शुद्धविग्रहाय नमः, **८८. ॐ शाश्वताय नमः,**
८९. ॐ खण्डपरशवे नमः, **९०. ॐ अजपाश विमोचकाय नमः,**
९१. ॐ मृडाय नमः, **९२. ॐ पशुपतये नमः,**
९३. ॐ देवाय नमः, **९४. ॐ महादेवाय नमः,**
९५. ॐ अव्ययाय नमः, **९६. ॐ प्रभवे नमः,**
९७. ॐ पूषदन्तभिदे नमः, **९८. ॐ अव्यग्राय नमः,**
९९. ॐ दक्षाध्वर हराय नमः, **१००. ॐ हराय नमः,**
१०१. ॐ भगनेत्रभिदे नमः, **१०२. ॐ अव्यक्ताय नमः,**
१०३. ॐ सहस्राक्षाय नमः, **१०४. ॐ सहस्रपदे नमः,**
१०५. ॐ अपवर्गप्रदाय नमः, **१०६. ॐ अनन्ताय नमः,**
१०७. ॐ तारकाय नमः, **१०८. ॐ परमेश्वराय नमः।**

॥ दूर्वांकुरम् ॥

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती, परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्र तनु, सहस्रेण शतेन च॥ –१३.२०
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, दूर्वांकुरम् समर्पयामि।

यदि पूजन में शमी पत्र, भाँग, धतूरा–मदार, इत्र आदि चढ़ाना हो तो दूर्वांकुरम् के पश्चात् **त्र्यम्बकम् यजामहे ....** मंत्र बोलकर समर्पित कर दें।

॥ सौभाग्य द्रव्याणि॥ (कुमकुम, अबीर, गुलाल)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं, ज्याया हेतिं परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्, पुमान् पुमा ꣳ सं परिपातु विश्वतः॥
–२९.५१

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, सौभाग्य द्रव्याणि समर्पयामि।

॥ धूपम् ॥

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्, बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः, पद्भ्या ꣳ शूद्रोअजायत॥ - ३१.११
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, धूपं आघ्रापयामि।

॥ दीपम् ॥

ॐ चन्द्रमा मनसो जातः, चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च, मुखादग्निरजायत॥ -३१.१२
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, दीपं दर्शयामि।

॥ नैवेद्यम् ॥

ॐ नाभ्याऽ आसीदन्तरिक्ष ꣳ, शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्, तथा लोकाँ२ अकल्पयन्॥ - ३१.१३
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।

॥ ऋतुफलम् ॥

ॐ याः फलिनीर्याऽ अफलाऽ, अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता, नो मुञ्चन्त्व ꣳ हसः॥ -१२.८९
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, ऋतुफलं समर्पयामि।

॥ ताम्बूलपूगीफलानि ॥

ॐ यत्पुरुषेण हविषा, देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं, ग्रीष्म ऽ इध्मः शरद्धविः॥ ३१.१४
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, ताम्बूलपूगीफलानि समर्पयामि।

॥ दक्षिणा ॥

ॐ सप्तास्यासन् परिधयः, त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽ, अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥ - ३१.१५
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

॥ मन्त्र-पुष्पाञ्जलिः ॥

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः, तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त, यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः॥ ३१.१६
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने, नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान्

कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। तै०आ० १.३१

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

दोनों हाथ जोड़कर नमन करें।

ॐनमोऽस्त्वनन्तायसहस्रमूर्तये, सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्रकोटी युगधारिणे नमः॥

यदि कालसर्प योग दोष निवारण हेतु पूजन किया गया है, तो मंत्र पुष्पाञ्जलि के बाद अग्नि स्थापन कर यज्ञीय प्रक्रिया जोड़ें। गायत्री मंत्र की ११ एवं महामृत्युञ्जय मंत्र की २७ आहुतियाँ प्रदान करें। पूर्णाहुति कर आरती सम्पन्न करें।

॥ आरती ॥

ॐ यं ब्रह्मवेदान्तविदो वदन्ति, परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये।
विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा, तस्मै नमोविघ्नविनाशनाय॥
ॐ यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्र मरुतः, स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः,
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैः, गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा, पश्यन्ति यं योगिनो,
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः, देवाय तस्मै नमः॥
कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानी सहितं नमामि॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव-देव॥

(सभी लोग व्यक्तिगत या सामूहिक आरती लें।)

॥ क्षमा-प्रार्थना ॥

ॐ आवाहनं न जानामि, नैव जानामि पूजनम्।
विसर्जनं न जानामि, क्षमस्व परमेश्वर!॥ १॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं, भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव! परिपूर्णं तदस्तु मे॥ २॥
अनेन कृतेन श्रीशिवाभिषेक कर्मणा,
श्रीभवानी शङ्करमहारुद्रः प्रीयताम् न मम॥ ३॥

सबके कल्याण हेतु शुभकामना करें-

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्॥१॥
श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां, विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम्।
तेज आयुष्यमारोग्यं, देहि मे हव्यवाहन॥-लौगा० स्मृ०

॥ शान्ति-अभिषिञ्चनम्॥

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः, पृथिवी शान्तिरापः, शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः, शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः, सर्व ँ शान्तिः, शान्तिरेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि॥ ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः। सर्वारिष्ट-सुशान्तिर्भवतु। -३६.१७

(अन्य उपस्थित जन पुष्प-बिल्वपत्रादि चढ़ायें, इस बीच पञ्चाक्षर स्तोत्र, महाकालाष्टक आदि का पाठ, शिव कीर्तन किया जाय। प्रतिष्ठित मूर्ति का विसर्जन नहीं किया जाता)।

॥ ॐ श्रीसाम्बसदाशिवार्पणमस्तु॥

टिप्पणी:- प्रतिष्ठित शिवलिंग न हो तो धातु, पत्थर या मिट्टी आदि की प्रतिमा बनाकर प्राण प्रतिष्ठा हेतु स्वस्तिवाचन के पश्चात् दायें हाथ में पुष्पलेकर शिवलिंग (गणेश, पार्वती हों तो उनका भी)स्पर्श करें।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य, बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं, यज्ञ ँ समिमं दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ-२.१३

ॐ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु, अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै, मामहेति च कश्चन॥ - प्रति० म०पृ०३५२

पूजन की समाप्ति पर विसर्जन कर दें।

ॐ यान्तु देवगणाः सर्वे, पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकाम समृद्ध्यर्थं, पुनरागमनाय च॥

॥ आरती शिव जी की॥ (१)

आरती त्रिशूलधारी की, कृपानिधि त्रितापहारी की।
जमा जब असुरों का डेरा, लगाया विपदा ने फेरा॥
जगत् को पापों ने घेरा, धरा ने व्याकुल हो टेरा।

शम्भु दो त्राण, मिटे अज्ञान। शक्ति उभरी त्रिपुरारी की,
आरती त्रिशूलधारी की .....
दोषमय हुआ मनुज चिन्तन, दिव्य गुण छोड़ हुआ निर्धन।
दीन-हीनों जैसा जीवन, निराशा ग्रसित मनुज का मन।
देवता विकल, साधना सफल। हुई लीला अवतारी की,
आरती त्रिशूलधारी की .....
बन गये शिव प्रज्ञा-अवतार, दूर करने को युग का भार।
शिवगणों को करने तैयार, साथ ले जगदम्बा का प्यार॥
गही युग डोर, दिया झकझोर। बजी धुन डमरूधारी की,
आरती त्रिशूलधारी की .....
कृपा कर महाकाल आए, सभी शिवगण हैं हर्षाए।
भावनाशील दौड़ धाये, लोकहित में आगे आए॥
चाहते भक्ति और शिव शक्ति। वन्दना संकटहारी की,
आरती त्रिशूलधारी की .....

****

॥ आरती शिव जी की ॥ (२)

ॐ जय शिव ओङ्कारा, ओ३म् जय शिव ओङ्कारा।
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, त्रिगुणात्मक धारा॥ ॐ जय.....
चतुरानन एकानन पञ्चानन राजे।
हंसासन, गरुडासन, वृषवाहन साजे॥ ॐ जय.....
दो भुज चार चतुर्भुज, दशभुज अति सोहे।
त्रिगुण स्वरूप निरखते, त्रिभुवन जन मोहे॥ ॐ जय.....
अक्षमाला वनमाला, मुण्डमाला धारी।
चन्दन मृगमद् चन्दे, भोले शुभकारी॥ ॐ जय.....
श्वेताम्बर पीताम्बर, बाघाम्बर अङ्गे।
सनकादिक देवादिक, भूतादिक सङ्गे॥ ॐ जय.....
करके मध्य कमण्डलु, चक्र त्रिशूल धर्त्ता।
जग सर्जक जग पालक, परिवर्तन कर्त्ता॥ ॐ जय.....
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, प्रेरक सुविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित, ये तीनों एका॥ ॐ जय.....

त्रिगुण स्वामी की आरती, जो कोई नर गावे।
आयु-प्राण-यश-सम्पति, शुभ सद्गति पावे॥ ॐ जय.....

****

॥ शिवपञ्चाक्षर स्तोत्र ॥

शिव पञ्चाक्षर मंत्र है 'नमः शिवाय'। इस स्तोत्र के पाँचों पद क्रमशः पञ्चाक्षर मंत्र के एक एक अक्षर से प्रारम्भ होने वाले भगवान् शिव के सम्बोधनों से युक्त हैं, पर प्रचलित पञ्चाक्षर स्तोत्र में कही कमियाँ भाषित होती थीं, जैसे सम्बद्ध अक्षर वाले शिव के सम्बोधन हर पद में कम ही थे, गण दोष के कारण गायन में लय भी बाधित होती थी। उन कमियों को दूर करते हुए यह स्तोत्र 'वेद विभाग, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, गायत्रीकुञ्ज-शान्तिकुञ्ज' ने प्रस्तुत किया है। आशा है, यह स्तोत्र शिव भक्तों को रुचेगा।

नागेन्द्रहाराय नगेश्वराय, न्यग्रोधरूपाय नटेश्वराय।
नित्याय नाथाय निजेश्वराय, तस्मै नकाराय नमः शिवाय॥ १॥
मृत्युञ्जयायादि - महेश्वराय, मखान्तकायागमवन्दिताय।
मत्स्येन्द्रनाथाय महीधराय, तस्मै मकाराय नमः शिवाय॥ २॥
शिवाय सौराष्ट्रशुभेश्वराय, श्रीसोमनाथाय शिवाप्रियाय।
शान्ताय सत्यं शशिशेखराय,तस्मै शिकाराय नमः शिवाय॥ ३॥
वेदाय विश्वार्चनवेङ्कटाय, विश्वाय विष्णोरपिवन्दिताय।
व्यालाय व्याघ्राय वृषभध्वजाय, तस्मै वकाराय नमः शिवाय॥ ४॥
यज्ञस्वरूपाय युगेश्वराय, योगीन्द्रनाथाय यमान्तकाय।
युनांयविष्ठाय यतीश्वराय, तस्मै यकाराय नमः शिवाय॥ ५॥

****

॥ श्रीमहाकालाष्टकम्॥

असम्भवं सम्भव-कर्तुमुद्यतं, प्रचण्ड-झञ्झावृतिरोधसक्षमम्।
युगस्य निर्माणकृते समुद्यतं, परं महाकालममुं नमाम्यहम्॥ १॥
यदा धरायामशान्तिः प्रवृद्धा, तदा च तस्यां शान्तिं प्रवर्धितुम्।

विनिर्मितं शान्तिकुञ्जाख्यतीर्थकं, परं महाकालममुं नमाम्यहम्॥ २॥
अनाद्यनन्तं परमं महीयसं, विभोःस्वरूपं परिचाययन्मुहुः।
युगानुरूपं च पथं व्यदर्शयत्, परं महाकालममुं नमाम्यहम्॥ ३॥
उपेक्षिता यज्ञमहादिकाः क्रियाः, विलुप्तप्रायं खलु सान्ध्यमाह्निकम्।
समुद्धृतं येन जगद्धिताय वै, परं महाकालममुं नमाम्यहम्॥ ४॥
तिरस्कृतं विस्मृतमप्युपेक्षितं, आरोग्यवाहं यजनं प्रचारितुम्।
कलौ कृतं यो रचितुं समुद्यतः, परं महाकालममुं नमाम्यहम्॥ ५॥
तपः कृतं येन जगद्धिताय वै, विभीषिकायाश्च जगन्नु रक्षितुम्।
समुज्ज्वला यस्य भविष्य-घोषणा, परं महाकालममुं नमाम्यहम्॥ ६॥
उदार-नम्रं हृदयं नु यस्य यत्, तथैव तीक्ष्णं गहनं च चिन्तनम्।
ऋषेश्चरित्रं परमं पवित्रकं, परं महाकालममुं नमाम्यहम्॥ ७॥
जनेषु देवत्ववृतिं प्रवर्द्धितुं, नभोधरायाञ्च विधातुमक्षयम्।
युगस्य निर्माण कृता च योजना, परं महाकालममुं नमाम्यहम्॥ ८॥

यः पठेच्चिन्तयेच्चापि, महाकाल-स्वरूपकम्।
लभेत परमां प्रीतिं, महाकालकृपादृशा॥ ९॥

॥ श्री महाकालाष्टक ॥ (पद्यानुवाद)

असम्भव पराक्रम के हेतु तत्पर, विध्वंस का जो करता दलन है।
नवयुग सृजन पुण्य सङ्कल्प जिनका, ऐसे महाकाल को नित नमन है॥ १॥
भू पर भरी भ्रान्ति की आग के बीच, जो शक्ति के तत्त्व करता चयन है।
विकसित किये शान्तिकुञ्जादि युगतीर्थ, ऐसे महाकाल को नित नमन है॥ २॥
अनादि अनुपम अनश्वर अगोचर, जिनका सभी भाँति अनुभव कठिन है।
युग शक्ति का बोध सबको कराया, ऐसे महाकाल को नित नमन है॥ ३॥
विस्मृत-उपेक्षित पड़ी साधना का, जिनने किया जागरण-उन्नयन है।
घर-घर प्रतिष्ठित हुईं वेदमाता, ऐसे महाकाल को नित नमन है॥ ४॥
यज्ञीय विज्ञान, यज्ञीय जीवन, जो सृष्टि-पोषक दिव्याचरण है।
उसको उबारा प्रतिष्ठित बनाया, ऐसे महाकाल को नित नमन है॥ ५॥
मनुष्यता के दुःख दूर करने, तपकर कमाया परम पुण्य धन है।
उज्ज्वल भविष्यत् की घोषणा की, ऐसे महाकाल को नित नमन है॥ ६॥

अनीति भञ्जक शुभ कोप जिनका, शुभ ज्ञानयुत श्रेष्ठ चिन्तन गहन है।
ऋषि कल्प जीवन जिनका परिष्कृत, ऐसे महाकाल को नित नमन है॥ ७॥
देवत्व मानव-मन में जगाकर, सङ्कल्प भू पर अमरपुर सृजन है।
युग की सृजन योजना के प्रणेता, ऐसे महाकाल को नित नमन है॥ ८॥

महाकालकीप्रेरणा, श्रद्धायुतचितलाय।
नरपावे सद्गति परं,त्रिविधताप मिट जायँ॥ ९॥

॥ श्रीरुद्राष्टकम्॥

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं। विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम्॥
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्॥ १॥
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं। गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम्॥
करालं महाकाल कालं कृपालं। गुणागार संसार सारं नतोऽहम्॥ २॥
तुषाराद्रि संकाश गौरं गम्भीरं। मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरम्॥
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारुगङ्गा। लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा॥ ३॥
चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं। प्रसन्नानं नीलकण्ठं दयालम्॥
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं। प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि॥ ४॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं। अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम्॥
त्रयःशूल निर्मूलनं शूलपाणिं। भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्॥ ५॥
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी। सदासज्जनानन्ददाता पुरारी॥
चिदानन्दसन्दोह मोहापहारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी॥ ६॥
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं। भजंतीह लोके परे वा नराणाम्॥
न तावत् सुखं शान्ति सन्तापनाशं। प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्॥ ७॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां। नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम्॥
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं। प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो॥ ८॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं, विप्रेणहरतुष्टये।
ये पठन्तिनराभक्त्या,तेषां शम्भुःप्रसीदति॥ ९॥

॥ श्री शिवताण्डवस्तोत्रम्॥

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले,
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम्।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं,

चकारचण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्॥ १॥
जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी-
विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्द्धनि।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके,
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम॥ २॥
धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर-
स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि,
क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि॥ ३॥
जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा-
कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे,
मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि॥ ४॥
सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर-
प्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः,
श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः॥ ५॥
ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा-
निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम्।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं,
महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः॥ ६॥
करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल-
द्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम॥ ७॥
नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुर-
त्कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबद्धकन्धरः।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः॥ ८॥
प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा-
वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम्।

स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे॥ ९॥
अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी-
रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम्।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे॥ १०॥
जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वस-
द्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट्।
धिमिद्धिमिद्धिमिद्ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल-
ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः॥ ११॥
दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजो-
र्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम्॥ १२॥
कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन्।
विलोललोललोचनो ललामभाललग्नकः
शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदासुखी भवाम्यहम्॥ १३॥
इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम्।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिन्तनम्॥ १४॥
पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं,
यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे।
तस्यस्थिरांरथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां
लक्ष्मींसदैवसुमुखींप्रददातिशम्भुः॥
इति श्रीरावणकृतं शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

॥ द्वादशज्योतिर्लिङ्गानि॥

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारममलेश्वरम्॥ १॥

1. सौराष्ट्रप्रदेश (काठियावाड़) में श्रीसोमनाथ, 2.श्रीशैल पर

श्री मल्लिकार्जुन, 3. उज्जयिनी (उज्जैन) में श्रीमहाकाल, 4. ॐकारेश्वर अथवा अमलेश्वर नर्मदा जी के तट पर स्थित हैं॥ १॥

परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने॥ २॥

5. परली में वैद्यनाथ, 6. डाकिनी नामक स्थान में श्रीभीमशङ्कर, 7. सेतुबन्ध पर श्रीरामेश्वर, 8. दारुका वन में श्रीनागेश्वर जी विद्यमान हैं॥ २॥

वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे।
हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये॥ ३॥

9. वाराणसी (काशी) में श्रीविश्वनाथ, 10. गौतमी (गोदावरी) के तट पर श्रीत्र्यम्बकेश्वर, 11. हिमालय पर केदारखण्ड में श्रीकेदारनाथ और 12. शिवालय में श्रीघुश्मेश्वर को स्मरण करें॥ ३॥

एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥ ४॥

जो मनुष्य प्रतिदिन प्रातःकाल और सन्ध्या के समय इन बारह ज्योतिर्लिङ्गों का नाम लेता है, उसके सात जन्मों का किया हुआ पाप इन लिङ्गों के स्मरण मात्र से समाप्त हो जाता है॥ ४॥

गृहस्थ होकर भी पूर्ण योगी होना शिव जी के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटना है। सांसारिक व्यवस्था को चलाते हुए भी वे योगी रहते हैं, पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं। वे अपनी धर्मपत्नी को भी मातृ-शक्ति के रूप में देखते हैं। यह उनकी महानता का दूसरा आदर्श है। ऋद्धि-सिद्धियाँ उनके पास रहने में गर्व अनुभव करती हैं। यहाँ उन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि गृहस्थ रहकर भी आत्मकल्याण की साधना संभव है। जीवन में पवित्रता रखकर उसे हँसते-खेलते पूरा किया जा सकता है।

शिवोऽहम् शिवोऽहम्

शिवोऽहम् शिवोऽहम् - शिवोऽहम् शिवोऽहम्,
चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥
मनो बुद्ध्यहंकार चित्तानि नाहम्
न च श्रोत्र जिह्वे न च घ्राण नेत्रे।
न च व्योम भूमिर्न तेजो न वायुः
चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥ १ ॥
न च प्राण संज्ञो न वै पञ्चवायुः
न वा सप्तधातुर्न वा पञ्चकोशः।
न वाक्पाणिपादौ न चोपस्थपायू
चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥ २ ॥
न मे द्वेष रागौ न मे लोभ मोहौ
मदो नैव मे नैव मात्सर्य भावः।
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः
चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥ ३ ॥
न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखम्
न मन्त्रो न तीर्थं न वेदाः न यज्ञाः।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता
चिदानन्द रूपःशिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥ ४ ॥
न मृत्युर्न शंका न मे जातिभेदः
पिता नैव मे नैव माता न जन्म।
न बन्धुर्न मित्रं गुरुर्नैव शिष्यः
चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥ ५ ॥
अहं निर्विकल्पो निराकार रूपो
विभुत्वाच्च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्।
न चासंगतं नैव मुक्तिर्न मेयः
चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥ ६ ॥

****

जय देव-देव जय महादेव

जय देव–देव जय महादेव–योगी कहलाने वाले।
हे! त्रिपुर जलाने वाले–हे! रुद्र कहाने वाले॥
दुष्टों के तुम हृदय विदारक–डमरू बजाने वाले।
मन को संयत करने वाले–काम जलाने वाले॥
शिव तुम त्रिशूलधारी भक्तों के–शूल मिटाने वाले।
दु:ख दोष हटाने वाले–हे मुक्ति दिलाने वाले॥
माथे पर हैं चन्द्र विराजें–शान्ति बढ़ाने वाले। सुख
तुम पिशाच को, विषधर को भी–गले लगाने वाले॥
सिर पर गंगा पापनाशिनी–ताप मिटाने वाले।
सन्ताप मिटाने वाले–रसधार बहाने वाले॥

तुम भोले भाले शम्भु

तुम भोले भाले शम्भो, भस्मी रमाने वाले।
हे नाथ! भक्त जन के, संकट मिटाने वाले॥
तुमने सुधा सहित सब, सम्पत्ति बाँट डाली।
अवघड़ उदार दानी, रहते हो हाथ खाली॥
जगहित स्वयं गरल भी, मुख से लगाने वाले॥
है वेश तो अशिव पर, कल्याण रूप तुम हो।
तुम आशुतोष भी हो, तप, त्याग रूप तुम हो॥
पिछड़ों को साथ लेकर, आगे बढ़ाने वाले॥
तुम सन्त सज्जनों के, रक्षक हो सदाशिव हो।
हो रुद्र रूप भी तुम, यदि सामने अशिव हो॥
हो ज्ञान भावना की, धारा बहाने वाले॥

शिव का सुमिरन

शिव का सुमिरन हर घड़ी, करना कराना चाहिए।
यों अशिव के संग से, बचना बचाना चाहिए॥

मान जा मन हर घड़ी, आठों पहर शिव ध्यान कर।
तोड़ रिश्ता अशिव से, भव पार होना चाहिए॥ शिव का.....

क्यों अरे तू पड़ गया, चक्कर में माया जाल के।
सत्य, शिव, आनन्द में, मन को लगाना चाहिए॥ शिव का.....

क्यों वियोगी की तरह तू, जल रहा सन्ताप से।
इस कुयोगी हृदय को, योगी बनाना चाहिए॥ शिव का.....

शिव भोले हितकारी

शिव भोले हितकारी, लाज राखो हमारी।
एक तुम्हीं हो धन-बल मेरे। तुम स्वामी, हम सेवक तेरे॥
हे डमरू के धारी, लाज राखो हमारी॥
राह हमारी काँटों भरी है। पापों की गठरी, सिर पर धरी है॥
चलना पड़े आज भारी, लाज राखो हमारी॥
पावन नाम तुम्हारा भोले। लोभ-मोह के बन्धन खोले॥
माँगू शरण तिहारी, लाज राखो हमारी॥
तुम बिन और नहीं है दूजा। करते देव तुम्हारी पूजा॥
सबके पालन हारी, लाज राखो हमारी॥
विधि-विधान पूजा ना जानूँ। केवल तुमको अपना मानूँ॥
चरण पड़ा दुखियारी, लाज राखो हमारी॥

हे महादेव! हे महादेव!

हे महादेव! हे महादेव!, सब बोलो मिलकर महादेव।

लो डमरु की आवाज सुनो, क्यों बजा रहे हैं राज गुनो।
अब ताण्डव उन्हें रचाना है, दुष्टों को उन्हें छकाना है॥
अब महाकाल हैं महादेव, सब बोलो मिलकर महादेव॥

जो उनको शीश झुकायेंगे, जो उनके संग हो जायेंगे।
जो बदलेंगे अपने विचार, शिव होंगे जिनके सदाचार॥
वरदानी होंगे महादेव, सब बोलो मिलकर महादेव॥

अब ध्वंस ध्वस्त हो जायेगा, आतंक नष्ट हो जायेगा।
दुर्गुण, कुटेव अब छूटेंगे, दुश्चिन्तन के सिर फूटेंगे॥
मिट जायेंगे धोखा फरेब, सब बोलो मिलकर महादेव॥

परिवर्तन निश्चित होना है, अब नहीं पाप को ढोना है।
रौंदा जायेगा दानव दल, कुचला जायेगा अब तो छल॥
छूटेंगे अब कुत्सा कुटेव, सब बोलो मिलकर महादेव॥

आओ हम उनके संग चलें, आओ शिव के अनुरूप ढलें।
उज्ज्वल भविष्य अब आयेगा, युग परिवर्तन हो जायेगा॥
गूँजेगा जय-जय महादेव, सब बोलो मिलकर महादेव॥